

The article appeared in [Khushi Samay](#), [News Pahari](#), [Telescope Today](#), [Hindi Pardaphash](#), [IMNB](#), [Aryavat Kranti](#) and more dailies on World Blood Donor Day.

- विश्व रक्तदाता दिवस (14 जून) पर विशेष

जीवन में हर किसी को कभी न कभी परिजनों, रिश्तेदारों, दोस्तों या पड़ोसियों के लिए विशेष परिस्थितियों में रक्त (ब्लड) की आवश्यकता पड़ती ही है। कई बार हमें जरूरत के मुताबिक समय से सुरक्षित रक्त मिल जाता है तो कई बार समय से रक्त मिलने में मुश्किल का सामना करना पड़ता है। ऐसे में मरीज की जान तक बचाना मुश्किल हो जाता है। इसी मुश्किल को आसान बनाने के लिए हर वर्ष 14 जून को विश्व रक्तदाता दिवस मनाया जाता है।

विश्व रक्तदाता दिवस को मनाने का मूल मकसद लोगों को रक्तदान के प्रति जागरूक करना है ताकि किसी भी मुसीबत में फंसे अपने ही नहीं पराये को भी समय से सुरक्षित रक्त मिल सके और उनके प्राणों की रक्षा की जा सके। रक्तदान को महादान भी कहा जाता है क्योंकि यही एक ऐसी चीज है जिसे किसी भी लैब में या किसी अन्य तरीके से तैयार नहीं किया जा सकता है। इसलिए आज इस दिवस पर प्रण लेने की जरूरत है कि हम समय-समय पर रक्तदान कर महादानी बनने का गौरव हासिल करेंगे। इसके साथ ही आज उन महादानियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करने और सम्मान करने का भी दिन है जिनके दान की बदौलत हर साल न जाने कितने लोगों के प्राणों की रक्षा की जाती है। इसी को ध्यान में रखते हुए इस साल विश्व रक्तदाता दिवस की थीम है- “दान का उत्सव मनाने के 20 साल : रक्तदाताओं को धन्यवाद।”

18 से 65 साल का कोई भी पूर्ण रूप से स्वस्थ व्यक्ति रक्तदाता बन सकता है। रक्तदाता की कुछ जरूरी जांच भी की जाती है ताकि ब्लड बैंक तक किसी तरह से संक्रमित रक्त न पहुँचने पाए, इसीलिए हाल ही में टैटू बनवाने वालों व बीमार व्यक्तियों के रक्त लेने से भी परहेज किया जाता है ताकि रक्त की शुद्धता बरकरार रखी जा सके। वयस्क स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में 4.5 लीटर से पाँच लीटर रक्त होता है। कोई भी स्वस्थ व्यक्ति एक बार में 300 से 450 मिली लीटर रक्त दान कर सकता है, जिसकी भरपाई शरीर 24 से 48 घंटे में खुद कर लेती है। तीन माह के अन्तराल पर दोबारा रक्तदान किया जा सकता है। रक्त के अलग-अलग समूह होते हैं, जिनमें कुछ अति दुर्लभ किस्म के होते हैं, जिनके रक्तदाताओं की पहचान कर उनसे बराबर सम्पर्क में रहने की जरूरत होती है ताकि किसी विषम परिस्थिति में उनसे सम्पर्क कर रक्तदान की अपील की जा सके।

दुर्घटनाओं में घायलों, गर्भवती, सर्जिकल वाले मरीजों, थैलेसीमिया, कैंसर, एनीमिया आदि स्थितियों में मरीज के लिए रक्त की जरूरत अस्पतालों को आये दिन रहती है। ऐसे में सुरक्षित और पर्याप्त रक्त का संग्रह चुनौतीपूर्ण होता है, जिसे रक्तदाता के जरिये ही पूर्ण किया जा सकता है। इसलिए रक्तदान से जुड़ीं भ्रांतियों और गलतफहमियों को दूर करने के साथ खुद रक्तदान करने के लिए आगे आना चाहिए और इसके लिए दूसरों को भी प्रेरित किया जाना चाहिए। तो आइये हम सभी मिलकर आज इस पुनीत दिवस पर प्रण लें कि हम लोगों की जान बचाने के लिए खुद रक्तदान करेंगे और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करने के साथ ही स्वस्थ स्वास्थ्य परम्परा का भी निर्वहन करेंगे। इसके साथ ही हमें यह भी हमेशा ध्यान रखना है कि सुरक्षित रक्त जीवन बचाता है, इसलिए जब भी-जहाँ भी जरूरत होगी रक्तदान जरूर करेंगे और ब्लड बैंक को खाली होने से बचाएंगे।

रक्तदान से किसी तरह की कमजोरी नहीं आती बल्कि दिल की सेहत में सुधार के साथ ही दिल की बीमारियों और स्ट्रोक के खतरे को आसानी से कम किया जा सकता है। खून में आयरन की अधिक मात्रा दिल के दौरों के जोखिम को बढ़ा सकती है, जबकि नियमित रक्तदान से आयरन की अतिरिक्त मात्रा नियंत्रित हो जाती है, जो दिल की सेहत के लिए अच्छा है। रक्तदान व्यक्ति की जान को तो बचाता ही है साथ ही उनसे जुड़े परिवारजनों की आशाओं को भी जीवित रखता है, क्योंकि यह किसी भी रक्तदाता को पता नहीं होता कि उसके द्वारा दान किया गया रक्त कितने जरूरतमंद व्यक्तियों को मिल रहा है। एक यूनिट रक्त चार व्यक्तियों की जान बचा सकता है, क्योंकि इसके अलग-अलग अवयव श्वेत व लाल रक्त कोशिकाएं, प्लेटलेट्स और प्लाज्मा अलग-अलग लोगों के काम आ सकता है। इसलिए इससे ज्यादा पुण्य का कार्य और कोई नहीं हो सकता। खासकर गर्भवती को प्रसव के समय अतिरिक्त रक्त की आवश्यकता पड़ती है। ऐसी स्थिति में गर्भवती के साथ ही गर्भस्थ शिशु को सुरक्षित बनाने में एक-एक रक्तदाता महत्वपूर्ण हो जाता है। ऐसी ही आपात स्थितियों में रक्त की आपूर्ति बरकरार रखने के लिए लोगों को रक्तदान के लिए सहर्ष आगे आना चाहिए। जन्मदिन, शादी की सालगिरह, संस्थान के स्थापना दिवस जैसे खुशी के अवसरों पर भी रक्तदान कर दूसरों को नायाब तोहफा दे सकते हैं। ज्ञात हो कि विश्व रक्तदाता दिवस कार्ल लैंडस्टीनर के जन्मदिन 14 जून 1868 की सालगिरह पर हर साल मनाया जाता है। कार्ल लैंडस्टीनर को एबीओ रक्त समूह प्रणाली की खोज के लिए नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

विश्व रक्तदाता दिवस (14 जून) पर विशेष

रक्तदान कर जीवन रक्षा का पुण्य कमाएं

रक्त की कमी को पूरा करने के लिए हर वर्ष 14 जून को विश्व रक्तदाता दिवस मनाया जाता है

18 से 65 साल का कोई भी पूर्ण रूप से स्वस्थ व्यक्ति रक्तदाता बन सकता है, रक्तदाता की कुछ जरूरी जांच भी की जाती है

आपात स्थितियों में रक्त की आपूर्ति बरकरार रखने के लिए लोगों को रक्तदान के लिए सहर्ष आगे आना चाहिए



अर्जुन संदेश संवाददाता

गाजियाबाद। जीवन में हर किसी को कभी न कभी परिजनों, रिश्तेदारों, दोस्तों या पड़ोसियों के लिए विशेष परिस्थितियों में रक्त (ब्लड) की आवश्यकता पड़ती ही है। कई बार हमें जरूरत के मुताबिक समय से सुरक्षित रक्त मिल जाता है तो कई बार भरसक

कोशिश के बाद भी समय से रक्त नहीं मिल पाता। ऐसे में मरीज को जान तक बचाना मुश्किल हो जाता है। इसी मुश्किल को आसान बनाने के लिए हर वर्ष 14 जून को विश्व रक्तदाता दिवस मनाया जाता है। रक्तदाता दिवस पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने जनता से अपील की है कि अधिक से अधिक रक्तदान कर महादानी बनें।

रक्तदान कर महादानी बनने का गौरव करें हासिल : डॉ. भवतोष शंखर



मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) डॉ. भवतोष शंखर का कहना है कि विश्व रक्तदाता दिवस के आयोजन का उद्देश्य लोगों को रक्तदान के प्रति जागरूक करना है, ताकि किसी भी मुसीबत में फंसे अपने ही नहीं पराये को भी समय से सुरक्षित रक्त मिल सके और उनके प्राणों की रक्षा की जा सके। सीएमओ का कहना है कि रक्तदान को महादानी भी कहा जाता है। क्योंकि यही एक ऐसी चीज है जिसे किसी भी लैब में या किसी अन्य तरीके से

तैयार नहीं किया जा सकता है। इसलिए आज इस दिवस पर प्रण लेने की जरूरत है कि हम समय-समय पर रक्तदान कर महादानी बनने का गौरव हासिल करेंगे। इसके साथ ही आज उन महादानियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करने और सम्मान करने का भी दिन है जिनके दान की बदौलत हर साल न जाने कितने लोगों के प्राणों की रक्षा की जाती है। इसी को ध्यान में रखते हुए इस साल इस दिवस की थीम है- रक्तदान का उत्सव मनाने के 20 साल : धन्यवाद रक्तदाता। डॉ. भवतोष शंखर ने बताया कि 18 से 65 साल का कोई भी पूर्ण रूप से स्वस्थ व्यक्ति रक्तदाता बन सकता है। रक्तदान की कुछ जरूरी जांच भी की जाती है, ताकि ब्लड बैंक तक किसी तरह से संक्रमित रक्त न पहुँचने पाए। वयस्क स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में 4.5 लीटर से पाँच लीटर रक्त होता है। कोई भी स्वस्थ व्यक्ति एक बार में 300 से 450 मिली लीटर रक्तदान कर सकता है, जिसकी भरपाई शरीर 24 से 48 घंटे में खुद कर लेता है और कोई कमजोरी भी नहीं आती। तीन माह के अंतराल पर दोबारा रक्तदान किया जा सकता है। रक्त के अलग-अलग समूह होते हैं, जिनमें कुछ अति दुर्लभ किस्म के होते हैं, जिनके रक्तदाताओं की पहचान कर उनसे बराबर सम्पर्क में रहने की जरूरत होती है ताकि किसी विषम परिस्थिति में उनसे सम्पर्क कर रक्तदान की अपील की जा सके।

खुद रक्तदान कर दूसरों को भी करें प्रेरित : मुकेश कुमार शर्मा

पापुलेशन सर्विसेज इंटरनेशनल इंडिया (पीएसआई-इंडिया) के

एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर मुकेश कुमार शर्मा का कहना है कि दुर्घटनाओं में घायलों, सर्जिकल वाले मरीजों, बेलेंसीमिया, कैंसर, एनीमिया आदि स्थितियों में मरीज के लिए रक्त की जरूरत अस्पतालों को आगे दिन रहती है। ऐसे में सुरक्षित और पर्याप्त रक्त का संग्रह चुनौतीपूर्ण होता



है, जिसे रक्तदाता के जरिये ही पूर्ण किया जा सकता है। खासकर गर्भवती व गर्भस्थ शिशु को सुरक्षित बनाने में एक-एक रक्तदाता महत्वपूर्ण हो जाता है। ऐसी ही आपात स्थितियों में रक्त की आपूर्ति बरकरार रखने के लिए लोगों को रक्तदान के लिए सहर्ष आगे आना चाहिए। रक्तदान से जुड़ी भातियों और गलतफहमियों को दूर करने के साथ खुद रक्तदान करने के लिए आगे आना चाहिए और इसके लिए दूसरों को भी प्रेरित किया जाना चाहिए। तो आइये हम सभी मिलकर आज इस पुनीत दिवस पर प्रण लें कि हम लोगों की जान बचाने के लिए खुद रक्तदान करेंगे और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करने के साथ ही स्वस्थ स्वास्थ्य परम्परा का भी निर्वहन करेंगे। जन्मदिन या शादी की सालगिरह, संस्थान के स्थापना दिवस जैसे खुशी के अवसरों पर भी रक्तदान कर दूसरों को नायाब तोहफा दे सकते हैं।



रक्तदान : स्वस्थ रहें मरुत रहें

विश्व रक्तदाता दिवस आज : ब्लड डोनेशन के मिथक तोड़ बतायें उसके फायदे

लखनऊ
(एसएनबी)।

ब्लड डोनेट करने से
हार्ट की सेहत में
सुधार हो सकता है।

इससे हार्ट की बीमारियां और स्ट्रोक के खतरे को कम किया जा सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि नियमित रूप से ब्लड डोनेशन करने से अतिरिक्त आयरन की मात्रा नियंत्रित हो जाती है, जो कि ज्यादा होने पर हार्ट अटैक के खतरे को बढ़ा देती है। यही नहीं एक बार ब्लड डोनेशन की ब्लड यूनिट के घटकों से तीन जिंदगी बचाने में मदद मिलती है। उक्त बातें किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के ब्लड ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग प्रमुख प्रो. तुलिका चंद्रा ने कार्यक्रम में बताया। उन्होंने बताया कि प्रदेश में स्वेच्छिक रक्तदान में सुधार हुआ है। डा. तुलिका ने बताया कि प्रत्येक महीने में 5500 औसतन ब्लड डोनेशन होता है। इस वर्ष सात हजार प्रति माह ब्लड डोनेशन हो रहा है। विशेष रूप से युवा आबादी को मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता है। इसके तहत बच्चों को रक्तदान के फायदे बताने की जरूरत है, ताकि वे रक्तदान के प्रति अपनी आशंकाओं को दूर कर सकें। रक्तदान के बारे में अक्सर मिथक हैं कि कमजोर हो जाएंगे। जब कि शरीर में 5-6 लीटर ब्लड होता है। सिर्फ 350 मिलीलीटर ही दान करते हैं, जो आरक्षित रक्त होता है। ब्लड डोनेशन से पुराना रक्त अस्थि मज्जा नया रक्त बनाने के लिए उत्तेजित हो जाता है, जो शरीर के लिए मजबूत और अधिक उपयोगी होता है। डा. तुलिका ने बताया कि ब्लड में आयरन की अधिकता हेपेटाइटिस सी और अन्य लिवर संक्रमण के कारण बनता है। ब्लड डोनेशन से अतिरिक्त आयरन निकल जाता है और लिवर स्वस्थ रहता है। ब्लड डोनेशन के बाद एचआईवी के लिए नवीनतम तकनीक के माध्यम से चिकित्सकीय परीक्षण के साथ-साथ कुछ अन्य महत्वपूर्ण बीमारियों का भी परीक्षण करते हैं। इनमें एचसीवी. आदि वह भी पूर्णतया निःशुल्क होती है।

**ब्लड डोनेशन से हार्ट-लिवर को
स्वस्थ रखने में मिलती है मदद**



डा. तुलिका



मुकेश शर्मा

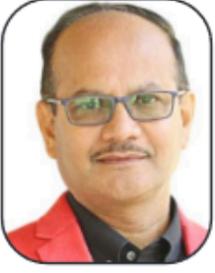
**रक्तदान कर जीवन
रक्षा का पुण्य कर्मां**

लखनऊ (एसएनबी)।
जीवन में हर किसी को कभी न
कभी परिजनों, रिश्तेदारों,
दोस्तों या पड़ोसियों के लिए
विशेष परिस्थितियों में रक्त

(ब्लड) की आवश्यकता पड़ती ही है। कई बार हमें जख्म के मुताबिक समय से सुरक्षित रक्त मिल जाता है तो कई बार बड़ी मशक्कत के बाद रक्त मिल पाता है। ऐसे में मरीज की जान तक बचाना मुश्किल हो जाता है। इसी मुश्किल को आसान बनाने के लिए हर वर्ष 14 जून को विश्व रक्तदाता दिवस मनाया जाता है। इसका मूल मकसद लोगों को रक्तदान के प्रति जागरूक करना है ताकि किसी भी मुसीबत में फंसे अपने ही नहीं पराये को भी समय से सुरक्षित रक्त मिल सके और उनके प्राणों की रक्षा की जा सके। पापुलेशन सर्विसेज इंटरनेशनल-इंडिया (पीएसआई-इंडिया) के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर मुकेश कुमार शर्मा का कहना है कि रक्तदान को महादान भी कहा जाता है क्योंकि यही एक ऐसा चीज है जिसे किसी भी लैब में या किसी अन्य तरीके से तैयार नहीं किया जा सकता है। इसलिए आज इस दिवस पर प्रण लेने की जरूरत है कि हम समय-समय पर रक्तदान कर महादानी बनने का गौरव हासिल करेंगे। दुर्घटनाओं में घायलों, सर्जिकल वाले मरीजों, थैलेसीमिया, कैंसर, एनीमिया आदि स्थितियों में मरीज के लिए रक्त की जरूरत अस्पतालों को आये दिन रहती है। ऐसे में सुरक्षित और पर्याप्त रक्त का संग्रह चुनौतीपूर्ण होता है, जिसे रक्तदाता के जरिये ही पूर्ण किया जा सकता है। खासकर गर्भवती व गर्भवस्थ शिशु को सुरक्षित बनाने में एक-एक रक्तदाता महत्वपूर्ण हो जाता है। ऐसी ही आपात स्थितियों में रक्त की आपूर्ति बरकरार रखने के लिए लोगों को रक्तदान के लिए सहर्ष आगे आना चाहिए।



रक्तदान कर जीवन रक्षा का पुण्य कमाएं



मुकेश कुमार शर्मा

जीवन में हर किसी को कभी न कभी परिजनों, रिश्तेदारों, दोस्तों या पड़ोसियों के लिए विशेष परिस्थितियों में रक्त (ब्लड) की आवश्यकता पड़ती ही है। कई बार हमें जरूरत के मुताबिक समय से सुरक्षित रक्त मिल जाता है तो कई बार समय से रक्त मिलने में मुश्किल का सामना करना पड़ता है। ऐसे में मरीज की जान तक बचाना मुश्किल हो जाता है। इसी मुश्किल को आसान बनाने के लिए हर वर्ष 14 जून को विश्व रक्तदाता दिवस मनाया जाता है।

विश्व रक्तदाता दिवस को मनाने का मूल मकसद लोगों को रक्तदान के प्रति जागरूक करना है ताकि किसी भी मुसीबत में फंसे अपने ही नहीं पराये को भी समय से सुरक्षित रक्त मिल सके और उनके प्राणों की रक्षा की जा सके। रक्तदान को महादान भी कहा जाता है क्योंकि यही एक ऐसी चीज है जिसे किसी भी लेब में या किसी अन्य तरीके से तैयार नहीं किया जा सकता है। इसलिए आज इस दिवस पर प्रण लेने की जरूरत है कि हम समय-समय पर रक्तदान कर महादानी बनने का गौरव हासिल करेंगे। इसके साथ ही आज उन महादानियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करने और सम्मान करने का भी दिन है जिनके दान की बदौलत हर साल न जाने कितने लोगों के प्राणों की रक्षा की जाती है। इसी को ध्यान में रखते हुए इस साल विश्व रक्तदाता दिवस की थीम है- "दान का उत्सव मनाने के 20 साल : रक्तदाताओं को धन्यवाद।"

18 से 65 साल का कोई भी पूर्ण रूप से स्वस्थ व्यक्ति रक्तदाता बन सकता है। रक्तदाता की कुछ जरूरी जांच भी की जाती है ताकि ब्लड बैंक तक किसी तरह से संक्रमित रक्त न पहुँचने पाए, इसीलिए हाल ही में टेस्ट बनवाने वालों व बीमार व्यक्तियों के रक्त लेने से भी परहेज किया जाता है ताकि रक्त की



विश्व रक्तदाता दिवस को मनाने का मूल मकसद लोगों को रक्तदान के प्रति जागरूक करना है ताकि किसी भी मुसीबत में फंसे अपने ही नहीं पराये को भी समय से सुरक्षित रक्त मिल सके और उनके प्राणों की रक्षा की जा सके। रक्तदान को महादान भी कहा जाता है क्योंकि यही एक ऐसी चीज है जिसे किसी भी लेब में या किसी अन्य तरीके से तैयार नहीं किया जा सकता है। इसलिए आज इस दिवस पर प्रण लेने की जरूरत है कि हम समय-समय पर रक्तदान कर महादानी बनने का गौरव हासिल करेंगे। इसके साथ ही आज उन महादानियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करने और सम्मान करने का भी दिन है जिनके दान की बदौलत हर साल न जाने कितने लोगों के प्राणों की रक्षा की जाती है।

शुद्धता बरकरार रखी जा सके। वयस्क स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में 4.5 लीटर से पाँच लीटर रक्त होता है। कोई भी स्वस्थ व्यक्ति एक बार में 300 से 450 मिली लीटर रक्त दान कर सकता है, जिसकी भरपाई शरीर 24 से 48 घंटे में खुद कर लेती है। तीन माह के अन्तराल पर दोबारा रक्तदान किया जा सकता है। रक्त के अलग-अलग समूह होते हैं, जिनमें कुछ अति दुर्लभ किस्म के होते हैं, जिनके रक्तदाताओं की पहचान कर उनसे बराबर सम्पर्क में रहने

की जरूरत होती है ताकि किसी विषम परिस्थिति में उनसे सम्पर्क कर रक्तदान की अपील की जा सके।

दुर्घटनाओं में घायलों, गर्भवती, सर्जिकल वाले मरीजों, थैलेसीमिया, कैसर, एनीमिया आदि स्थितियों में मरीज के लिए रक्त की जरूरत अस्पतालों को आये दिन रहती है। ऐसे में सुरक्षित और पर्याप्त रक्त का संग्रह चुनौतीपूर्ण होता है, जिसे रक्तदाता के जरिये ही पूर्ण किया जा सकता है। इसलिए रक्तदान से

जुड़ी भ्रातियों और गलतफहमियों को दूर करने के साथ खुद रक्तदान करने के लिए आगे आना चाहिए और इसके लिए दूसरों को भी प्रेरित किया जाना चाहिए। तो आइये हम सभी मिलकर आज इस पुनीत दिवस पर प्रण लें कि हम लोगों की जान बचाने के लिए खुद रक्तदान करेंगे और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करने के साथ ही स्वस्थ स्वास्थ्य परम्परा का भी निर्वहन करेंगे। इसके साथ ही हमें यह भी हमेशा ध्यान रखना है कि सुरक्षित रक्त जीवन बचाता है, इसलिए जब भी-जहाँ भी जरूरत होगी रक्तदान जरूर करेंगे और ब्लड बैंक को खाली होने से बचाएंगे।

रक्तदान से किसी तरह की कमजोरी नहीं आती बल्कि दिल की सेहत में सुधार के साथ ही दिल की बीमारियों और स्ट्रोक के खतरे को आसानी से कम किया जा सकता है। खून में आयरन की अधिक मात्रा दिल के दौरों के जोखिम को बढ़ा सकती है, जबकि नियमित रक्तदान से आयरन की अतिरिक्त मात्रा नियंत्रित हो जाती है, जो दिल की सेहत के लिए अच्छा है। रक्तदान व्यक्ति की जान को तो बचाता ही है साथ ही उनसे जुड़े परिवारजनों की आशाओं को भी जीवित रखता है, क्योंकि यह किसी भी रक्तदाता को पता नहीं होता कि उसके द्वारा दान किया गया रक्त कितने जरूरतमंद व्यक्तियों को मिल रहा है। एक यूनिट रक्त चार व्यक्तियों की जान बचा सकता है, क्योंकि इसके अलग-अलग अवयव श्वेत व लाल रक्त कोशिकाएँ, प्लेटलेट्स और प्लाज्मा अलग-अलग लोगों के काम आ सकता है। इसलिए इससे ज्यादा पुण्य का कार्य और कोई नहीं हो सकता। खासकर गर्भवती को प्रसव के समय अतिरिक्त रक्त की आवश्यकता पड़ती है। ऐसी स्थिति में गर्भवती के साथ ही गर्भस्थ शिशु को सुरक्षित बनाने में एक-एक रक्तदाता महत्वपूर्ण हो जाता है। ऐसी ही आपात स्थितियों में रक्त की आपूर्ति बरकरार रखने के लिए लोगों को रक्तदान के लिए सहर्ष आगे आना चाहिए। जन्मदिन, शादी की सालगिरह, संस्थान के स्थापना दिवस जैसे खुशी के अवसरों पर भी रक्तदान कर दूसरों को नायाब तोहफा दे सकते हैं। ज्ञात हो कि विश्व रक्तदाता दिवस कार्ल लैंडस्टीनर के जन्मदिन 14 जून 1868 की सालगिरह पर हर साल मनाया जाता है। कार्ल लैंडस्टीनर को एबीओ रक्त समूह प्रणाली की खोज के लिए नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

(लेखक पापुलेशन सर्विसेज इंटरनेशनल के एकजीक्यूटिव डायरेक्टर हैं)

दैनिक जर्नी ऑफ सक्सेस

P2, 14 जून, 2024

विश्व रक्तदाता दिवस: रक्तदान कर जीवन रक्षा का पुण्य कमाएं

● जर्नी ऑफ सक्सेस

गाजियाबाद। जीवन में हर किसी को कभी न कभी परिजनों, रिश्तेदारों, दोस्तों या पड़ोसियों के लिए विशेष परिस्थितियों में रक्त (ब्लड) की आवश्यकता पड़ती ही है। कई बार हमें जरूरत के मुताबिक समय से सुरक्षित रक्त मिल जाता है तो कई बार भरसक कोशिश के बाद भी समय से रक्त नहीं मिल पाता। ऐसे में मरीज की जान तक बचाना मुश्किल हो जाता है। इसी मुश्किल को आसान बनाने के लिए हर वर्ष 14 जून को विश्व रक्तदाता दिवस मनाया जाता है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) डॉ. भवतोष शंखधर का कहना है कि विश्व रक्तदाता दिवस के आयोजन का उद्देश्य लोगों को रक्तदान के प्रति जागरूक करना है ताकि किसी भी मुसीबत में फंसे अपने ही नहीं पराये को भी समय से सुरक्षित रक्त मिल सके और उनके प्राणों की रक्षा की जा सके। सीएमओ का कहना है कि रक्तदान को महादान भी कहा जाता है क्योंकि यही एक ऐसी चीज है जिसे किसी भी लैब

में या किसी अन्य तरीके से तैयार नहीं किया जा सकता है। इसलिए आज इस दिवस पर प्रण लेने की जरूरत है कि हम समय-समय पर रक्तदान कर महादानी बनने का गौरव हासिल करेंगे। इसके साथ ही आज उन महादानियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करने और सम्मान करने का भी दिन है जिनके दान की बदौलत हर साल न जाने कितने लोगों के प्राणों की रक्षा की जाती है। इसी को ध्यान में रखते हुए इस साल इस दिवस की थीम है- रक्तदान का उत्सव मनाने के 20 साल : धन्यवाद रक्तदाता। उन्होंने बताया 18 से 65 साल का कोई भी पूर्ण रूप से स्वस्थ व्यक्ति रक्तदाता बन सकता है। रक्तदाता की कुछ जरूरी जांच भी की जाती है ताकि ब्लड बैंक तक किसी तरह से संक्रमित रक्त न पहुँचने पाए। वयस्क स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में 4.5

लीटर से पाँच लीटर रक्त होता है। कोई भी स्वस्थ व्यक्ति एक बार में 300 से 450 मिली लीटर रक्त दान कर सकता है, जिसकी भरपाई शरीर 24 से 48 घंटे में खुद कर लेती है और कोई कमजोरी भी नहीं आती। तीन माह के अंतराल पर दोबारा रक्तदान किया जा सकता है। रक्त के अलग-अलग समूह होते हैं, जिनमें कुछ अति दुर्लभ किस्म के रक्तदाताओं की पहचान कर उनसे बराबर सम्पर्क में रहने की जरूरत होती है ताकि किसी विषम परिस्थिति में उनसे सम्पर्क कर रक्तदान की अपील की जा सके। पापुलेशन सर्विसेज इंटरनेशनल- इंडिया (पीएसआई-इंडिया) के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर मुकेश कुमार शर्मा का कहना है कि दुर्घटनाओं में घायलों, सर्जिकल वाले मरीजों, थैलेसीमिया, कैन्सर, एनीमिया

आदि स्थितियों में मरीज के लिए रक्त की जरूरत अस्पतालों को आये दिन रहती है। ऐसे में सुरक्षित और पर्याप्त रक्त का संग्रह चुनौतीपूर्ण होता है, जिसे रक्तदाता के जरिये ही पूर्ण किया जा सकता है। खासकर गर्भवती व गर्भवस्थ शिशु को सुरक्षित बनाने में एक-एक रक्तदाता महत्वपूर्ण हो जाता है। ऐसी ही आपात स्थितियों में रक्त की आपूर्ति बरकरार रखने के लिए लोगों को रक्तदान के लिए सहर्ष आगे आना चाहिए। रक्तदान से जुड़ी भ्रातियों और गलतफहमियों को दूर करने के साथ खुद रक्तदान करने के लिए आगे आना चाहिए और इसके लिए दूसरों को भी प्रेरित किया जाना चाहिए। तो आइये हम सभी मिलकर आज इस पुनीत दिवस पर प्रण लें कि हम लोगों की जान बचाने के लिए खुद रक्तदान करेंगे और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करने के साथ ही स्वस्थ स्वास्थ्य परम्परा का भी निर्वहन करेंगे। जन्मदिन या शादी की सालगिरह, संस्थान के स्थापना दिवस जैसे खुशी के अवसरों पर भी रक्तदान कर दूसरों को नायाब तोहफा दे सकते हैं।



रक्तदान कर जीवन रक्षा का पुण्य कमाएं - मुकेश कुमार शर्मा

खुशी समय



जीवन में हर किसी को कभी न कभी परिजनों, रिश्तेदारों, दोस्तों या पड़ोसियों के लिए विशेष परिस्थितियों में रक्त (ब्लड) की आवश्यकता पड़ती ही है। कई बार हमें जरूरत के मुताबिक समय से सुरक्षित रक्त मिल जाता है तो कई बार समय से रक्त मिलने में मुश्किल का सामना करना पड़ता है। ऐसे में मरीज की जान तक बचाना मुश्किल हो जाता है। इसी मुश्किल को आसान बनाने के लिए हर वर्ष 14 जून को विश्व रक्तदाता दिवस मनाया जाता है।

विश्व रक्तदाता दिवस को मनाने का मूल मकसद लोगों को रक्तदान के प्रति जागरूक करना है ताकि किसी भी मुसीबत में फंसे अपने ही नहीं पराये को भी समय से सुरक्षित रक्त मिल सके और उनके प्राणों की रक्षा की जा सके। रक्तदान को महादान भी कहा जाता है क्योंकि यही एक ऐसी चीज है जिसे किसी भी लैब में या किसी अन्य तरीके से तैयार नहीं किया जा सकता है। इसलिए आज

इस दिवस पर प्रण लेने की जरूरत है कि हम समय-समय पर रक्तदान कर महादानी बनने का गौरव हासिल करेंगे। इसके साथ ही आज उन महादानियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करने और सम्मान करने का भी दिन है जिनके दान की बदौलत हर साल न जाने कितने लोगों के प्राणों की रक्षा की जाती है। इसी को ध्यान में रखते हुए इस साल विश्व रक्तदाता दिवस की थीम है- "दान का उत्सव मनाने के 20 साल रक्तदाताओं को धन्यवाद।"

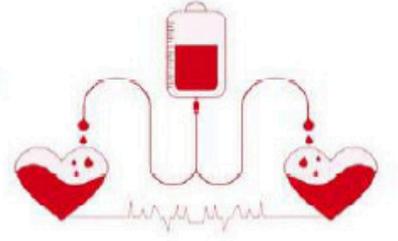
18 से 65 साल का कोई भी पूर्ण रूप से स्वस्थ व्यक्ति रक्तदाता बन सकता है। रक्तदाता की कुछ जरूरी जांच भी की जाती है ताकि ब्लड बैंक तक किसी तरह से संक्रमित रक्त न पहुँचने पाए, इसीलिए हाल ही में टैटू बनवाने वालों व बीमार व्यक्तियों के रक्त लेने से भी परहेज किया जाता है ताकि रक्त की शुद्धता बरकरार रखी जा सके। वयस्क स्वस्था व्यक्ति के शरीर में 4.5 लीटर से पाँच लीटर रक्त होता है। कोई भी स्वस्थ व्यक्ति एक बार में 300 से 450 मिली लीटर रक्त दान कर सकता है, जिसकी भरपाई शरीर 24 से 48 घंटे में खुद कर लेती है। तीन माह के अन्तराल पर दोबारा रक्तदान किया जा सकता है। रक्त के अलग-अलग समूह होते हैं, जिनमें कुछ अति दुर्लभ

किस्म के होते हैं, जिनके रक्तदाताओं की पहचान कर उनसे बराबर सम्पर्क में रहने की जरूरत होती है ताकि किसी विषम परिस्थिति में उनसे सम्पर्क कर रक्तदान की अपील की जा सके।

दुर्घटनाओं में घायलों, गर्भवती, सर्जिकल वाले मरीजों, थैलेसीमिया, कैंसर, एनीमिया आदि स्थितियों में मरीज के लिए रक्त की जरूरत अस्पतालों को आये दिन रहती है। ऐसे में सुरक्षित और पर्याप्त रक्त का संग्रह चुनौतीपूर्ण होता है, जिसे रक्तदाता के जरिये ही पूर्ण किया जा सकता है। इसलिए रक्तदान से जुड़ीं भाँतियाँ और गलतफहमियों को दूर करने के साथ खुद रक्तदान करने के लिए आगे आना चाहिए और इसके लिए दूसरों को भी प्रेरित किया जाना चाहिए। तो आइये हम सभी मिलकर आज इस पुनीत दिवस पर प्रण लें कि हम लोगों की जान बचाने के लिए खुद रक्तदान करेंगे और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करने के साथ ही स्वस्था स्वास्थ्य परम्परा का भी निर्वहन करेंगे। इसके साथ ही हमें यह भी हमेशा ध्यान रखना है कि सुरक्षित रक्त जीवन बचाता है, इसलिए जब भी-जहाँ भी जरूरत होगी रक्तदान जरूर करेंगे और ब्लड बैंक को खाली होने से बचाएंगे।

रक्तदान से किसी तरह की कमजोरी नहीं आती बल्कि दिल

विश्व रक्तदाता दिवस



की सेहत में सुधार के साथ ही दिल की बीमारियों और स्ट्रोक के खतरे को आसानी से कम किया जा सकता है। खून में आयरन की अधिक मात्रा दिल के दौरे के जोखिम को बढ़ा सकती है, जबकि नियमित रक्तदान से आयरन की अतिरिक्त मात्रा नियंत्रित हो जाती है, जो दिल की सेहत के लिए अच्छा है। रक्तदान व्यक्ति की जान को तो बचाता ही है साथ ही उनसे जुड़े परिवारजनों की आशाओं को भी जीवित रखता है, क्योंकि यह किसी भी रक्तदाता को पता नहीं होता कि उसके द्वारा दान किया गया रक्त कितने जरूरतमंद व्यक्तियों को मिल रहा है। एक यूनिट रक्त चार व्यक्तियों की जान बचा सकता है, क्योंकि इसके अलग-अलग अवयव श्वेत व लाल रक्त कोशिकाएँ, प्लेटलेट्स और प्लाज्मा अलग-अलग लोगों के काम आ सकता है। इसलिए इससे ज्यादा पुण्य का कार्य और कोई नहीं हो सकता। खासकर गर्भवती को प्रसव के समय अतिरिक्त रक्त की

आवश्यकता पड़ती है। ऐसी स्थिति में गर्भवती के साथ ही गर्भवस्थ शिशु को सुरक्षित बनाने में एक-एक रक्तदाता महत्वपूर्ण हो जाता है। ऐसी ही आपात स्थितियों में रक्त की आपूर्ति बरकरार रखने के लिए लोगों को रक्तदान के लिए सहर्ष आगे आना चाहिए। जन्मदिन, शादी की सालगिरह, संस्थान के स्थापना दिवस जैसे खुशी के अवसरों पर भी रक्तदान कर दूसरों को नायाब तोहफा दे सकते हैं। ज्ञात हो कि विश्व रक्तदाता दिवस कार्ल लैंडस्टीनर के जन्मदिन 14 जून 1868 की सालगिरह पर हर साल मनाया जाता है। कार्ल लैंडस्टीनर को एबीओ रक्त समूह प्रणाली की खोज के लिए नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

(लेखक पापुलेशन सर्विसेज इंटरनेशनल के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर हैं)

रक्तदान कर जीवन रक्षा का पुण्य कमाएं



मुकेश कुमार शर्मा

जीवन में हर किसी को कभी न कभी परिजनों, रिश्तेदारों, दोस्तों या पड़ोसियों के लिए विशेष परिस्थितियों में रक्त (ब्लड) की आवश्यकता पड़ती ही है। कई बार हमें जरूरत के मुताबिक समय से सुरक्षित रक्त मिल जाता है तो कई बार समय से रक्त मिलने में मुश्किल का सामना करना पड़ता है। ऐसे में मरीज की जान तक बचाना मुश्किल हो जाता है। इसी मुश्किल को आसान बनाने के लिए हर वर्ष 14 जून को विश्व रक्तदाता दिवस मनाया जाता है। विश्व रक्तदाता दिवस को मनाने का मूल मकसद लोगों को रक्तदान के प्रति जागरूक करना है ताकि किसी भी मुसीबत में फंसे अपने ही नहीं पराये को भी समय से सुरक्षित रक्त मिल सके और

उनके प्राणों की रक्षा की जा सके। रक्तदान को महादान भी कहा जाता है क्योंकि यही एक ऐसी चीज है जिसे किसी भी लैब में या किसी अन्य तरीके से तैयार नहीं किया जा सकता है। इसलिए आज इस दिवस पर प्रण लेने की जरूरत है कि हम समय-समय पर रक्तदान कर महादानी बनने का गौरव हासिल करेंगे। इसके साथ ही आज उन महादानियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करने और सम्मान करने का भी दिन है जिनके दान की बदौलत हर साल न जाने कितने लोगों के प्राणों की रक्षा की जाती है। इसी को ध्यान में रखते हुए इस साल विश्व रक्तदाता दिवस की थीम है— "दान का उत्सव मनाने के 20 साल रक्तदाताओं को धन्यवाद।" 18 से 65 साल का कोई भी पूर्ण रूप से स्वस्थ व्यक्ति रक्तदाता बन सकता है। रक्तदाता की कुछ जरूरी जांच भी की जाती है ताकि ब्लड बैंक तक किसी तरह से संक्रमित रक्त न पहुँचने पाए, इसीलिए हाल ही में टैटू बनवाने वालों व बीमार व्यक्तियों के रक्त लेने से भी परहेज किया जाता है ताकि रक्त की शुद्धता बरकरार रखी जा सके। वयस्क स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में 4.5 लीटर से पाँच लीटर रक्त होता

है। कोई भी स्वस्थ व्यक्ति एक बार में 300 से 450 मिली लीटर रक्त दान कर सकता है, जिसकी भरपाई शरीर 24 से 48 घंटे में खुद कर लेती है। तीन माह के अन्तराल पर दोबारा रक्तदान किया जा सकता है। रक्त के अलग-अलग समूह होते हैं, जिनमें कुछ अति दुर्लभ किस्म के होते हैं, जिनके रक्तदाताओं की पहचान कर उनसे बराबर सम्पर्क में रहने की जरूरत होती है ताकि किसी विषम परिस्थिति में उनसे सम्पर्क कर रक्तदान की अपील की जा सके। दुर्घटनाओं में घायलों, गर्भवती, सर्जिकल वाले मरीजों, थैलेसीमिया, कैंसर, एनीमिया आदि स्थितियों में मरीज के लिए रक्त की जरूरत अस्पतालों को आये दिन रहती है। ऐसे में सुरक्षित और पर्याप्त रक्त का संग्रह चुनौतीपूर्ण होता है, जिसे रक्तदाता के जरिये ही पूर्ण किया जा सकता है। इसलिए रक्तदान से जुड़ीं भ्रातियों और गलतफहमियों को दूर करने के साथ खुद रक्तदान करने के लिए आगे आना चाहिए और इसके लिए दूसरों को भी प्रेरित किया जाना चाहिए। तो आइये हम सभी मिलकर आज इस पुनीत दिवस पर प्रण लें कि

हम लोगों की जान बचाने के लिए खुद रक्तदान करेंगे और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करने के साथ ही स्वस्थ स्वास्थ्य परम्परा का भी निर्वहन करेंगे। इसके साथ ही हमें यह भी हमेशा ध्यान रखना है कि सुरक्षित रक्त जीवन बचाता है, इसलिए जब भी-जहाँ भी जरूरत होगी रक्तदान जरूर करेंगे और ब्लड बैंक को खाली होने से बचाएंगे। रक्तदान से किसी तरह की कमजोरी नहीं आती बल्कि दिल की सेहत में सुधार के साथ ही दिल की बीमारियों और स्ट्रोक के खतरे को आसानी से कम किया जा सकता है। खून में आयरन की अधिक मात्रा दिल के दौरे के जोखिम को बढ़ा सकती है, जबकि नियमित रक्तदान से आयरन की अतिरिक्त मात्रा नियंत्रित हो जाती है, जो दिल की सेहत के लिए अच्छा है। रक्तदान व्यक्ति की जान को तो बचाता ही है साथ ही उनसे जुड़े परिवारजनों की आशाओं को भी जीवित रखता है, क्योंकि यह किसी भी रक्तदाता को पता नहीं होता कि उसके द्वारा दान किया गया रक्त कितने जरूरतमंद व्यक्तियों को मिल रहा है। एक यूनिट रक्त चार व्यक्तियों की जान बचा सकता है, क्योंकि

इसके अलग-अलग अवयव श्वेत व लाल रक्त कोशिकाएँ, प्लेटलेट्स और प्लाज्मा अलग-अलग लोगों के काम आ सकता है। इसलिए इससे ज्यादा पुण्य का कार्य और कोई नहीं हो सकता। खासकर गर्भवती को प्रसव के समय अतिरिक्त रक्त की आवश्यकता पड़ती है। ऐसी स्थिति में गर्भवती के साथ ही गर्भस्थ शिशु को सुरक्षित बनाने में एक-एक रक्तदाता महत्वपूर्ण हो जाता है। ऐसी ही आपात स्थितियों में रक्त की आपूर्ति बरकरार रखने के लिए लोगों को रक्तदान के लिए सहर्ष आगे आना चाहिए। जन्मदिन, शादी की सालगिरह, संस्थान के स्थापना दिवस जैसे खुशी के अवसरों पर भी रक्तदान कर दूसरों को नायाब तोहफा दे सकते हैं। ज्ञात हो कि विश्व रक्तदाता दिवस कार्ल लैंडस्टीनर के जन्मदिन 14 जून 1868 की सालगिरह पर हर साल मनाया जाता है। कार्ल लैंडस्टीनर को एबीओ रक्त समूह प्रणाली की खोज के लिए नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

(लेखक पापुलेशन सर्विसेज इंटरनेशनल के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर हैं)

रक्तदान कर जीवन रक्षा का पुण्य कमाएं - मुकेश कुमार शर्मा

हम कलाम हिंदी दैनिक

जीवन में हर किसी को कभी न कभी परिजनों, रिश्तेदारों, दोस्तों या पड़ोसियों के लिए विशेष परिस्थितियों में रक्त (ब्लड) की आवश्यकता पड़ती ही है। कई बार हमें जरूरत के मुताबिक समय से सुरक्षित रक्त मिल जाता है तो कई बार समय से रक्त मिलने में मुश्किल का सामना करना पड़ता है। ऐसे में मरीज की जान तक बचाना मुश्किल हो जाता है। इसी मुश्किल को आसान बनाने के लिए हर वर्ष 14 जून को विश्व रक्तदाता दिवस मनाया जाता है।

विश्व रक्तदाता दिवस को मनाने का मूल मकसद लोगों को रक्तदान के प्रति जागरूक करना है ताकि किसी भी मुसीबत में फंसे अपने ही नहीं पराये को भी समय से सुरक्षित रक्त मिल सके और उनके प्राणों की रक्षा की जा सके। रक्तदान को महादान भी कहा जाता है क्योंकि यही एक ऐसी चीज है जिसे किसी भी लैब में या किसी अन्य तरीके से तैयार नहीं किया जा सकता है। इसलिए आज इस दिवस पर प्रण लेने की जरूरत है कि हम समय-समय पर रक्तदान कर महादानी बनने का गौरव हासिल करेंगे। इसके साथ ही आज उन महादानियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करने और सम्मान करने का भी दिन है जिनके दान की बदौलत हर साल न जाने कितने लोगों के प्राणों की रक्षा की जाती है। इसी को ध्यान में रखाते हुए इस साल विश्व रक्तदाता दिवस की थीम है— "दान का उत्सव मनाने के 20

साल : रक्तदाताओं को धन्यवाद।"

18 से 65 साल का कोई भी पूर्ण रूप से स्वस्थ व्यक्ति रक्तदाता बन सकता है।

रक्तदाता की कुछ जरूरी जांच भी की जाती है ताकि ब्लड बैंक तक किसी तरह से संक्रमित रक्त न पहुँचने पाए, इसीलिए हाल ही में टैटू बनवाने वालों

के रक्त लेने से भी परहेज किया जाता है ताकि रक्त की शुद्धता बरकरार रखी जा सके। वयस्क स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में 4.5 लीटर से पाँच लीटर रक्त होता है। कोई भी स्वस्थ व्यक्ति एक बार में 300 से 450 मिली लीटर रक्त दान कर सकता है, जिसकी भरपाई शरीर 24 से 48 घंटे में खुद कर लेती है। तीन माह के अन्तराल पर दोबारा रक्तदान किया जा सकता है। रक्त के अलग-अलग समूह होते हैं, जिनमें कुछ अति दुर्लभ किस्म के होते हैं, जिनके रक्तदाताओं की पहचान कर उनसे बराबर सम्पर्क में रहने की जरूरत होती है ताकि किसी विषम परिस्थिति में उनसे सम्पर्क कर रक्तदान की अपील की जा सके।



दुर्घटनाओं में घायलों, गर्भवती, सर्जिकल वाले मरीजों, थैलेसीमिया, कैंसर, एनीमिया आदि स्थितियों में मरीज के लिए रक्त की जरूरत अस्पतालों को आये दिन रहती है।

ऐसे में सुरक्षित और पर्याप्त रक्त का संग्रह चुनौतीपूर्ण होता है, जिसे रक्तदाता के जरिये ही पूर्ण किया जा सकता है। इसलिए रक्तदान से जुड़ी भ्रांतियों और गलतफहमियों को दूर करने के साथ खुद रक्तदान करने

के लिए आगे आना चाहिए और इसके लिए दूसरों को भी प्रेरित किया जाना चाहिए। तो आइये हम सभी मिलकर आज इस पुनीत दिवस पर प्रण लें कि हम लोगों की जान बचाने के लिए खुद रक्तदान करेंगे और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करने के साथ ही स्वस्थ स्वास्थ्य परम्परा का भी निर्वहन करेंगे। इसके साथ ही हमें यह भी हमेशा ध्यान रखना है कि सुरक्षित रक्त जीवन बचाता है, इसलिए जब भी-जहाँ भी जरूरत होगी रक्तदान जरूर करेंगे और ब्लड बैंक को खाली होने से बचाएंगे।

रक्तदान से किसी तरह की कमजोरी नहीं आती बल्कि दिल की सेहत में सुधार के साथ ही दिल की बीमारियों और स्ट्रोक के खतरे को आसानी से कम किया जा सकता है। खून में आयरन की अधिक मात्रा दिल के दौरों के जोखिम को बढ़ा सकती है, जबकि नियमित रक्तदान से आयरन की अतिरिक्त मात्रा नियंत्रित हो जाती है, जो दिल की

सेहत के लिए अच्छा है। रक्तदान व्यक्ति की जान को तो बचाता ही है साथ ही उनसे जुड़े परिवारजनों की आशाओं को भी जीवित रखता है, क्योंकि यह किसी भी रक्तदाता को पता नहीं होता कि उसके द्वारा दान किया गया रक्त कितने जरूरतमंद व्यक्तियों को मिल रहा है। एक यूनिट रक्त चार व्यक्तियों की जान बचा सकता है, क्योंकि इसके अलग-अलग अवयव श्वेत व लाल रक्त कोशिकाएं, प्लेटलेट्स और प्लाज्मा अलग-अलग लोगों के काम आ सकता है। इसलिए इससे ज्यादा पुण्य का कार्य और कोई नहीं हो सकता। खासकर गर्भवती को प्रसव के समय अतिरिक्त रक्त की आवश्यकता पड़ती है। ऐसी स्थिति में गर्भवती के साथ ही गर्भस्थ शिशु को सुरक्षित बनाने में एक-एक रक्तदाता महत्वपूर्ण हो जाता है। ऐसी ही आपात स्थितियों में रक्त की आपूर्ति बरकरार रखने के लिए लोगों को रक्तदान के लिए सहर्ष आगे आना चाहिए। जन्मदिन, शादी की सालगिरह, संस्थान के स्थापना दिवस जैसे खुशी के अवसरों पर भी रक्तदान कर दूसरों को नायाब तोहफा दे सकते हैं। ज्ञात हो कि विश्व रक्तदाता दिवस कार्ल लैंडस्टीनर के जन्मदिन 14 जून 1868 की सालगिरह पर हर साल मनाया जाता है। कार्ल लैंडस्टीनर को एबीओ रक्त समूह प्रणाली की खोज के लिए नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। (लेखक पापुलेशन सर्विसेज इंटरनेशनल के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर हैं)